स्थानीय प्रचलित पारम्परिक मौसम विज्ञान विषय पर आयोजित कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण

कार्यक्रम : एक दिवसीय कार्यशाला
कार्यक्रम उद्देश्यः स्थानीय प्रचलित पारम्परिक मौसम विज्ञान (कहावत व मुहावरे पर आधारित) (संकलन एवं विश्लेषण)
दिनांक : 27.09.2015
समय : प्रातः 09:00 से सांय 04:00 बजे तक
स्थल : ग्राम–गजहड़ा, पोस्ट–उज्जरपार, गगहा, गोरखपुर।
आयोजक : पहला कदम, गोरखपुर
प्रतिभागी : स्थानीय अनुभवी ग्रामवासी, कृषक, सेवानिवृत्त अध्यापक, सेवानिवृत्त फौजी, धर्मगुरू, पशुपालक, नाविक, चौकीदार इत्यादि।
प्रतिभागी सं0 : 40

उत्तर प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र जो कि कृषि प्रधान क्षेत्र है, प्रत्येक वर्ष बाढ़, अतिवृष्टि, शीतलहर, लू, ओलावृष्टि इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण प्रभावित होता है। विगत कुछ वर्षों में जलवायु में हुये परिवर्तन के कारण यहां के कृषकों को अत्यधिक आर्थिक व सामाजिक हानि हुयी है। सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन, केन्द्रीय जल आयोग, मौसम विज्ञान विभाग आदि तकनीकी विभागों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर अपनी कार्ययोजना का निर्माण कर कार्य सम्पादित करते हैं। लेकिन अनेकों बार यह अनुभव किया गया है कि यह सूचनायें विफल हो रही हैं, जिसके कारण विकास के कार्य बाधित हो रहे हैं।

शुक्रवार की बादरी, रही सनीचर छाय। तो यों भाखै भड्डुरी, बिन बरसे ना जाए।।
यदि शुक्रवार के बादल शनिवार को छाए रह जाएं, तो भड्डुरी कहते हैं कि वह बादल बिना पानी बरसे नहीं जाएगा।

आसाढ़ी पूनो दिना, गाज बीजु बरसंत। नासे लच्छन काल का, आनंद मानो सत।।

आषाढ़ की पूणिमा को यदि बादल गरजे, बिजली चमके और पानी बरसे तो वह वर्ष बहुत सुखद बीतेगा।

हस्त बरस चित्रा मंडराय। घर बैठे किसान सुख पाए।।
हस्त में पानी बरसने और चित्रा में बादल मंडराने से (क्योंकि चित्रा की धूप बड़ी विषाक्त होती है) किसान घर बैठे सुख पाते हैं।

रोहिनी जो बरसै नहीं, बरसे जेठा मूर। एक बूंद स्वाती पड़ै, लागै तीनिउ नूर।।
यदि रोहिनी में वर्षा न हो पर ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र बरस जाए तथा स्वाती नक्षत्र में भी कुछ बूंदे पड़ जाएं तो तीनों अन्न (जौ, गेहूं, और चना) अच्छा होगा।

UNISDR - The International Day for Disaster Reduction is a day to celebrate how people and communities are reducing their exposure to disasters and raising awareness about the importance of DRR. "The theme for 2015 will focus on the use of traditional, indigenous and local knowledge".

आद्रा में जौ बोवै साठी। दु:खै मारि निकारै लाठी।।

जो किसान आद्रा में धान बोता है वह दु:ख को लाठी मारकर भगा देता है।

उपरोक्त कहावतों के माध्यम से हमारे आदरणीय पूर्वजों ने मौसम तथा उसमें होने वाले परिवर्तन का गहन रूप से अध्ययन किया है और अपने इस प्रायोगिक अनुभव के आधार पर अनेकों मुहावरे, कहावतें और लोकोक्तियां तथा घटनाओं का मौखिक वर्णन किया है। यह वर्णन आज भी पारम्परिक रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में भी यदा–कदा सुनने को मिलती है। आज का वैज्ञानिक युग बहुत हद तक इन पारम्परिक संदेशों पर विश्वास नहीं करता है, जबकि यह सर्वविदित है कि यह पारम्परिक संदेश जो कहावतों, मुहावरों के रूप में हैं, आज भी सत्य सिद्ध होते हैं।

पहला कदम द्वारा उक्त को दृष्टिगत रखते हुये यह निर्णय लिया गया कि ग्राम स्तर पर अनुभवी ग्रामवासियों, कृषकों, सेवानिवृत्त अध्यापक एवं फौजी, धर्मगुरू, पशुपालक, नाविक इत्यादि के साथ एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन कर इनके अनुभवों को एकत्रित किया जाये। संस्था द्वारा यह भी निर्णय लिया गया है कि इन पारम्परिक कहावतों/मुहावरों को अर्थ सहित लिपिबद्ध कर जिला एवं राज्य स्तर सम्बन्धित विभागों (कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, आपदा, सिंचाई, मौसम विभाग इत्यादि) से साझा करेंगे। यह सूचनायें निशिचित तौर पर विकास योजनाओं को सम्पादित करने में सहयोगी सिद्ध होंगे साथ ही इन कहावतों के मूल अस्तित्व को बचाने का एक छोटा सा प्रयास।

इसी क्रम में दिनांक 27.09.2015 को प्रातः 09:00 बजे से सायंकाल 04:00 बजे तक संस्था द्वारा ग्राम–गजहड़ा, पोस्ट–उज्जरपार, तहसील–गोला, गोरखपुर में कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 40 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला में निम्न मुख्य बिन्दुओं पर विस्तृत रूप से चर्चा की गयी :–

1. पारम्परिक मौसम विज्ञान ज्ञान क्या है ?
2. आज के परिवेश में पारम्परिक ज्ञान को किस प्रकार प्रयोग में लाया जाता है ?
3. प्रयोग के दौरान आने वाली सम्भावित कठिनाईयों/बाधाओं तथा इन्हें दूर किये जाने हेतु सुझाव।

बैठक का शुभारम्भ कार्यक्रम का संचालन कर रहे श्री शैलेश कुमार शाही द्वारा सभी का स्वागत कर किया गया। श्री शाही द्वारा प्रतिभागियों को यह स्पष्ट किया गया कि कार्यशाला का आयोजन पारम्परिक ज्ञान को एकत्रित कर उनका विश्लेषण भी किया जायेगा।

समूह चर्चा :– समस्त प्रतिभागियों को 04 समूहों में विभाजित कर चर्चा प्रारम्भ की गयी। प्रतिभागियों को वर्षा, भूकम्प, अग्निकाण्ड, ओलावृष्टि,

अतिवृष्टि, वज्रपात, सूखा आदि विषयों पर अपने समूह में चर्चा कर उपलब्ध कराये गये चार्ट पेपर पर अंकित किये जाने को कहा गया। सभी समूहों ने व्यापक रूप से चर्चा के उपरान्त प्रमुख बिन्दु निम्नवत् हैं :–

1	रात दिना घम छाहीं। घाघ कहैं तब वर्षा नाहीं।	अर्थ–यदि रात में आकाश स्वच्छ और दिन में घमछाहीं अर्थात् छॉह होती रहे तो घाघ कवि का कहना है कि, अब वर्षा नहीं है।
2	लगा अगस्त फूले बनकास। अब छोड़ों बरखा की आस।।	अर्थ– जब अगस्त नामक तारा उदय हो गया और वन मे कांस फूल गई, तब वर्षा की आशा छोड़ दो।
3	दिन में गरमी रात को ओस। बह पुरवैया झब्बर झब्बर।। घाघ कहैं कुछ होनी होई। कुवॉ के पानी से धोबी धोई।।	अर्थ– (बरसात के दिनों में) जब दिन में बादल हो और रात में बादल न हो और पुरूवा हवा रूक–रूक कर चले, झब्बर–झब्बर चले अर्थात् जब चले तब झौंहाकर चले तो घाघ का कहना है कि, यह कुछ होनहार है, अच्छा नहीं होगा और अवर्षण का योग है, जिसमें धोबी कुऍ के पानी से वस्त्र धोवेंगे।
4	एक बूँद जो चैत में परैं सहस बूँद सावन में हरै।।	अर्थ– यदि चैत मास में एक बूँद भी जल बरस जाय तो हजार बूँद की हानि सावन में हो, अर्थात् सूखा पड़ जायेगा।
5	अगहन बरसे हून, पूस बरसे दून। माघ बरसे सवाई, फागुन बरसे मूर गॅवाई।।	अर्थ–यदि अगहन में वर्षा हो तो फसल अच्छी होती है और पूस में वर्षा हो तो दूनी और माघ में वर्षा होने से सवाई पैदावार होती है। परन्तु वर्षा यदि फागुन के महीने में होती है तो मूल अर्थात् बीज भी नहीं मिलता है।

<u>प्रतिभागियों की राय</u> :

- **श्री जियुत सिंह,** उम्र–62 वर्ष, कृषक, ग्राम–सरदहा, पो0–सिहाइजपार, गोरखपुर का मत है कि ये प्राचीन कहावतें व मुहावरे अनायास ही नहीं कही जाती है, बल्कि इन कहावतों में सत्यता है। वर्षों से हम इन कहावतों को चरितार्थ होते देखते चले आ रहे हैं और यह कहावतें आज भी प्रासंगिक हैं।
- **श्री दीनबन्धु विश्वकर्मा,** उम्र–60 वर्ष, कृषक, ग्राम–गजहड़ा, पो0–उज्जरपार, गोरखपुर ने चर्चा के दौरान इन कहावतों पर प्रकाश डालते हुये कहा कि इन प्राचीन कहावतों की उपयोगिता आज के इस आधुनिक दौर में उतना ही महत्व है, जितना की हमारे पूर्वजों के काल में। साथ ही उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन आज एक विकट समस्या है, जिसका प्रभाव न सिर्फ फसलों पर अपितु मानव एवं पशुओं पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ रहा है।

- **श्री शम्भू नाथ शाही**, उम्र–75 वर्ष, ग्राम–गजहड़ा, पो0–उज्जरपार,

गोरखपुर ने पुरानी कहावतों का वर्णन करते हुये कहा कि ये कहावतें किसी विज्ञान से कम नहीं हैं, इस धरोहर को बचाने और अमल करने की जरूरत है।

पारम्परिक मौसम विज्ञान को जीवित रखने हेतु प्रतिभागियों एवं संस्था द्वारा तैयार की गयी रणनीति :–

1. **संकलन** – संस्था द्वारा यह निर्णय लिया गया कि उक्त प्राप्त कहावतों, अनुभवों आदि को एक पुस्तिका के रूप में विकसित किया जायेगा, जिसमें जलवायु परिवर्तन, आपदा न्यूनीकरण, स्थानीय नाजुकताओं एवं क्षमताओं का विश्लेषण इत्यादि अन्य बिन्दु भी सम्मिलित किये जायेंगे।
2. **पाठ्यक्रम में सम्मिलित**– उच्च प्राथमिक विद्यालयों एवं महाविद्यालय स्तर पर संचालित किये जाने वाले सामाजिक विज्ञान, भूगोल आदि सम्बन्धित पाठ्यक्रम में विशेष विषय के रूप में सम्मिलित किया जाने हेतु विभिन्न स्तर पर प्रयास।

3. **व्यापक प्रचार–प्रसार**– ग्रामीणों द्वारा संस्था से यह अपेक्षा की गयी कि ग्राम एवं शहरी स्तर पर प्रतियोगिता, दिवाल लेखन इत्यादि के माध्यम से विलुप्त हो रही संस्कृति को पुर्नजीवित किया जाये।
4. **कार्यशाला का आयोजन–** संस्था के संयुक्त सचिव, श्री पवन कुमार शुक्ल द्वारा यह अवगत कराया गया कि जल्द ही विश्वविद्यालय के रक्षा अध्ययन विभाग एवं अन्य संस्थाओं के सहयोग से विभिन्न स्तर पर कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा तथा प्राप्त सुझावों को प्रस्तावित पुस्तिका में सम्मिलित किया जायेगा।

क्र. सं.	नाम	पता	उम्र	व्यवसाय	मोबाईल नं0
1.	शिव कुमार शाही	गजहड़ा पो0– उज्जरपार, गोरखपुर	54	कृषि	9935959480
2.	गोबरी शाही	,,	60	,,	–
3.	श्याम बिहारी शाही	,,	70	,,	–
4.	रामविजय यादव	,,	66	,,	9621864044
5.	घनश्याम यादव	,,	58	,,	9621016671
6.	केदारनाथ शाही	,,	65	,,	–
7.	सुरेन्द्र शाही	,,	62	,,	8127071133
8.	जगरनाथ शाही	,,	65	,,	9838951819
9.	रामगोपाल शाही	,,	71	,,	9936632040
10.	शिव शाही	,,	63	,,	9473955473
11.	रामानन्द शाही	,,	60	,,	9936203634
12.	राधाकृष्ण शाही	बड़हलगंज गोरखपुर	37	सामाजिक कार्यकर्ता	8400710801
13.	सन्तोष शाही	,,	35	कृषि	9621026117
14.	घनश्याम मौर्य	ग्राम – सिहेगौर बड़हलगंज गोरखपुर	44	समाजिक कार्यकर्ता	8004097802
15.	रमेश पाण्डेय	ग्राम – पो. उज्जरपार	65	कृषि	8127288635
16.	दुखन्ती प्रसाद	ग्राम – रामपुर बघरा पो. रामपुरबघरा	80	सतसंग	9936203657

17.	जीउत सिंह	ग्राम सरदहा	62	अध्यापन	–
18.	शम्भूनाथ शाही	गजहड़ा, उज्जरपार	75	से0नि0 अध्यापक	9935879252
19.	नन्दलाल	गजहड़ा, उज्जरपार	–	–	–
20.	अरूण शाही	गजहड़ा, उज्जरपार	50	कृषि	99354350003
21.	सर्वदानन्द शाही (छोटू)	गजहड़ा, उज्जरपार	30	अभिकर्ता	9936369773
22.	श्री कृष्ण शाही	ग्राम–गजहड़ा,पो0– उज्जरपार, जिला– गोरखपुर (उ0प्र0)	52	कृषि	9415338177
23.	दीनबन्धु विश्वकर्मा	,,	60	,,	8005318157
24.	विश्वनाथ शाही	,,	72	,,	9415193337
25.	आनन्द प्रकाश शाही	ग्राम–गजहड़ा,पो0– उज्जरपार, जिला– गोरखपुर (उ0प्र0)	42	कृषि	9415851221
26.	शिवकरन	,,	66	,,	9198733608
27.	रामदेव यादव	,,	50	,,	7897720418
28.	संदीप शाही	,,	36	,,	9187220250
29.	राजेन्द्र शाही	,,	70	,,	–
30.	रामदरश यादव	,,	75	,,	–
31.	संदीप यादव	,,	21	,,	9793479545
32.	शिव प्रसाद शाही	,,	50	नौकरी	9451190090
33.	गुलाब शााही	,,	59	कृषि	–
34.	प्रेम नारायण शाही	,,	60	,,	–
35.	राम दयाल गौतम	पहला कदम, शास्त्रीनगर, गोरखपुर	36	सलाहकार	8601643788
36.	गजेन्द्र सिंह बघेल	,,	26	सचिव	7800368855
37.	पवन कुमार शुक्ला	,,	28	संयुक्त सचिव	9415201161
38.	शैलेश कुमार शाही	,,	40	समन्वयक, पहला कदम	9170477082
39.	मनोज कुमार जायसवाल	,,	36	कोषाध्यक्ष	9415691354
40.	रवि प्रताप	जिला आपदा कार्यालय, गो0	30	नौकरी	9621783713